75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

आरईसी लिमिटेड की गृह पत्रिका

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ऊर्जायन

अंक-9, जनवरी, 2023

आरईसी अब एक महारत्न कंपनी

ऊर्जा क्षेत्र का आधार

कई दशकों से ऊर्जा क्षेत्र का वित्तपोषण

- उत्पादन
- वितरण
- पारेषण
- नवीकरणीय ऊर्जा
- ऊर्जा ट्रांजिशन
- अवसंरचना क्षेत्र

के वित्तपोषण में भागीदार

अधिक जानने के लिए स्कैन करें

हमें फॉलो करें @reclindia

आरईसी REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

संरक्षक

श्री विवेक कुमार देवांगन, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री अजय चौधरी
निदेशक (वित्त)

श्री वी. के. सिंह
निदेशक (तकनीकी)

श्री आर. पी. वैष्णव
कार्यपालक निदेशक
(आरईसीआईपीएमटी, आईटी, राजभाषा)

प्रधान संपादक
श्री पी. पी. सिंह
मुख्य महाप्रबंधक
(कम्प्लायंस, राजभाषा)

संपादक
श्री व्योमकेश शर्मा
उप प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री एस. एन. मौर्य
अधिकारी (राजभाषा)

हमसे संपर्क करें:

आरईसी लिमिटेड
प्लॉट नं. आई–4, सेक्टर–29, गुरूग्राम,
हरियाणा–122001
फोन: +91-124-4441300
ई–मेल: contactus@recl.in
वेबसाइट: www.recindia.nic.in
सीआईएन: L40101DL1969GOI005095

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि आरईसी की उनसे सहमति हो। अतः पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए आरईसी अथवा संपादन टीम किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है, इसके लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी हैं।

अनुक्रम

साक्षात्कार एवं संदेश

- विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी का संदेश 4
- पावर लाइन में प्रकाशित सी.एम.डी. महोदय का इंटरव्यू (हिंदी अनुवाद) 5
- डन एंड ब्रैडस्ट्रीट में प्रकाशित निदेशक (वित्त) महोदय का इंटरव्यू (हिंदी अनुवाद) 9
- निदेशक (तकनीकी) महोदय का संदेश 11

लेख एवं कविताएं

- ग्रीन हाइड्रोजन: भविष्य की ऊर्जा– गोविंद सैनी 12
- फादर कामिल बुल्के: एक यूरोपीय हिंदी प्रेमी और रामकथा के विद्वान– सुमित सिंह 15
- निर्णय लेने के तीन आयाम– कुन्दन लाल 18
- 'रामायण–द गेम ऑफ लाईफ: शैटर्ड ड्रीम्स' की पुस्तक समीक्षा–सिमरदीप सिंह 20
- लाचित बोड़फुकन: असम के आत्म–गौरव और स्वाभिमान के गौरवशाली प्रतीक– असीम गुप्ता 22
- आत्मनिर्भर भारत: एक राष्ट्रीय कर्तव्य/तू सूरज है, फिर निकलेगा– राहुल गुप्ता 24
- आत्मनिर्भर भारत: अवसर और चुनौतियां– नेहा शर्मा 26
- हौसलों की उड़ान– अनंता गोयल 28
- कोई फर्क नहीं ज्यादा– विवेक कुमार वर्मा 29
- धर्म क्या है– राहुल राज 29
- कोई शॉर्ट कट नहीं होता– कृतिका धकाते 30

कार्यक्षेत्र एवं कारोबार

- कारोबार से संबंधित गतिविधियां 31
- गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा सूरत में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन 33
- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण 35
- हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 37
- आरईसी द्वारा 27वें इंटर पावर सीपीएसयू बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन 38
- सी.एस.आर. गतिविधियां 39
- सतर्कता जागरूकता सप्ताह 40
- पुरस्कार एवं प्रशस्तियाँ 41
- राजभाषा पुरस्कार 43
- भारत द्वारा जी20 सम्मेलन की अध्यक्षता 45

विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी का संदेश

विश्व हिन्दी दिवस की सभी लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं। इस अवसर पर विदेश मंत्रालय के मुख्यालय और विभिन्न देशों में स्थित भारतीय मिशन एवं केंद्रों में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन सराहनीय है।

कहा गया है– 'भाषा विश्वं योजयति' अर्थात भाषा विश्व को जोड़ती है। हमारी गौरवशाली संस्कृति व संस्कारों को तकनीक के इस दौर में विभिन्न माध्यमों से दुनिया के हर हिस्से में पहुंचाने में हिन्दी का बड़ा योगदान रहा है।

आजादी के अमृतकाल में देश पंचप्राणों में शामिल, 'विरासत पर गर्व' और 'गुलामी की मानसिकता से मुक्ति' के भाव के साथ विकास के पथ पर अग्रसर है। हमारा देश अनेक भाषाओं व संस्कृतियों की जननी है और यह समृद्ध विरासत हमें सतत प्रेरणा देती है। इसी प्रकार, औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति के लिए आपसी संवाद और परस्पर समन्वय को सशक्त करने में अमृतकाल में भारतीय भाषाओं की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहने वाली है।

हिन्दी की प्रगति, हमारे राष्ट्र के मूल्यों के प्रसार के साथ–साथ विश्व बंधुत्व के भाव से भी जुड़ी हुई है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की विशेष पहचान और भारतवंशियों को एकता के सूत्र में पिरोने में हिन्दी एक मजबूत कड़ी है।

विश्व हिन्दी दिवस, हमें लोक अभिव्यक्ति की समृद्ध निधि के रूप में हिन्दी के महत्व को समझने और इसका उत्सव मनाने का एक अवसर देता है। मुझे विश्वास है कि इस अवसर पर सभी हिन्दी प्रेमी न केवल स्वयं अधिक–से–अधिक हिन्दी भाषा का प्रयोग करेंगे, बल्कि भावी पीढ़ी को भी अपनी समृद्ध विरासत से जोड़ने में अमूल्य योगदान देंगे।

विश्व हिन्दी दिवस के अवसर पर विश्व भर में आयोजित कार्यक्रमों से जुड़े सभी हिन्दी प्रेमियों को बधाई व हार्दिक शुभकामनाएं।

(नरेन्द्र मोदी)

नई दिल्ली
पौष 14, शक संवत् 1944
04 जनवरी, 2023

आरईसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से साक्षात्कार

"महारत्न सीपीएसई बनने के बाद आरईसी के लिए कारोबार के नए अवसर"

श्री विवेक कुमार देवांगन, आई.ए.एस, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, आरईसी लिमिटेड

कंपनी की पिछले एक वर्ष की प्रमुख उपलब्धियों, इसकी मुख्य प्राथमिकताओं और भविष्य की योजनाओं के बारे में सी.एम.डी. महोदय ने पावर लाइन मैग्जीन के साथ बातचीत की। उन्होंने विद्युत क्षेत्र की वर्तमान स्थिति, प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों तथा भविष्य के दृष्टिकोण पर भी अपने विचार व्यक्त किए।

विद्युत क्षेत्र की वर्तमान स्थिति पर आपके क्या विचार हैं?

चूंकि विद्युत आवश्यक सेवाओं में शामिल है, इसलिए विद्युत की खपत पर कोविड–19 का प्रभाव सीमित था। फिर भी, इस क्षेत्र को प्रोजेक्ट्स के पूरा होने में देरी, वित्तीय व्यवस्था पर दबाव और नकदी की कमी जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था पर इस क्षेत्र को सरकार की ओर से मजबूत नीतिगत समर्थन मिला और सरकार द्वारा किए गए विभिन्न सुधारों से विद्युत क्षेत्र ने सभी चुनौतियों का सामना किया।

पिछले कुछ वर्षों में, ट्रांसमिशन क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई है, जिसमें कई प्राइवेट प्लेयर देश के ग्रिड में विस्तार के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ग्रिड को अधिक विश्वसनीय, सुदृढ़, सुरक्षित और स्मार्ट बनाने के लिए केंद्र और राज्य स्तर पर ट्रांसमिशन यूटिलिटीज से नई प्रौद्योगिकियों में महत्त्वपूर्ण निवेश की आशा है। पिछले कुछ वर्षों में डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर में कई सुधार हुए हैं, जिनका उद्देश्य इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मकता और दक्षता लाना है। भारत ने केंद्र शासित प्रदेशों में अपनी विद्युत डिस्ट्रीब्यूशन कंपनियों के निजीकरण की प्रक्रिया पहले ही शुरू कर दी है। इससे अधिक प्रतिस्पर्धा आएगी और डिस्कॉम अपने प्रदर्शन मानकों में सुधार करने और अधिक उपभोक्ता–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के लिए मजबूर होंगे। हाल के दिनों में, उत्पादन क्षेत्र में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन परियोजनाओं में बड़े निवेश हुए हैं और क्षमता निर्माण भी हुआ है। निजी क्षेत्रों और सरकारी पीएसयू की भागीदारी के कारण ऐसे निवेश में वृद्धि के साथ, आने वाले कुछ वर्षों में क्षमता वृद्धि में और तेजी आने

की आशा है। जीवाश्म ईंधन आधारित परिवहन से बदलाव के कारण बुनियादी ढांचे के निर्माण और ईवी चार्जिंग के लिए मांग उत्पन्न होगी। स्टोरेज समाधान, हरित हाइड्रोजन/हरित अमोनिया और अपतटीय पवन ऊर्जा परियोजनाओं में भारी निवेश की उम्मीद की गई है। ऊर्जा क्षेत्र में, हमने ऐसे परिवर्तन पहले नहीं देखे हैं जो अब हो रहे हैं। आर्थिक गतिविधियों में तेजी आई है और ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण में वृद्धि हुई है जिससे विद्युत की मांग बढ़ रही है। ग्रीन एनर्जी की दिशा में भी तेजी आई है। सरकार इस क्षेत्र को आधुनिक, कुशल और टिकाऊ बनाने के लिए विभिन्न सुधारों को लागू कर रही है। विद्युत क्षेत्र में किए गए इन उपायों से उपभोक्ताओं को बेहतर सेवा मिलेगी और जीवन की समग्र गुणवत्ता भी बेहतर होगी।

डिस्ट्रीब्यूशन क्षेत्र के सामने कौन से मुद्दे सबसे बड़े हैं? इनका समाधान कैसे किया जा सकता है?

तकनीकी रूप से पुराने और अपनी समय–सीमा पूरी कर चुके डिस्ट्रीब्यूशन ढांचे को मजबूत करने की जरूरत है। हायर लोड्स को संभालने में सक्षम अत्याधुनिक, स्मार्ट, ठोस और विश्वसनीय निकासी और डिस्ट्रीब्यूशन प्रणाली स्थापित करना आज के समय की आवश्यकता है। यह क्षेत्र इस समय घाटे से जूझ रहा है, इसलिए नीति निर्माताओं को राज्यों के डिस्कॉम और यूटिलिटियों को वित्तीय रूप से मजबूत बनाने के लिए कदम उठाना जरूरी हो गया है। ''गैर–तकनीकी हानियों'' में बिजली की चोरी, मीटर से छेड़छाड़ और ग्राहकों द्वारा भुगतान न करना शामिल है, इन्हें कम करने के लिए सरकार ने टैरिफ में संशोधन, राष्ट्रीय विद्युत कोष का निर्माण, उदय की शुरुआत और स्मार्ट मीटरों की स्थापना जैसे मजबूत सुधार किए हैं जिनके सकारात्मक परिणाम दिखने लगे हैं। भारत सरकार के प्रमुख कार्यक्रम सौभाग्य के तहत घरों को बिजली कनेक्शन देने की ऐतिहासिक उपलब्धि को देखते हुए डिस्ट्रीब्यूशन क्षेत्र पर और भी अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इससे डिस्ट्रीब्यूशन क्षेत्र एक विश्वसनीय, किफायती और बेहतर भविष्य के विकास की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आरडीएसएस की वर्तमान स्थिति क्या है? इसके क्या परिणाम होंगे?

आरडीएसएस यानि संशोधित वितरण क्षेत्र योजना एक सुधार–आधारित और परिणाम–संबद्ध योजना है, जिसमें चार वर्षों की अवधि में 3 ट्रिलियन रुपये से अधिक का निवेश किया जाना है। इस योजना का उद्देश्य उपभोक्ताओं को विद्युत आपूर्ति की गुणवत्ता और विश्वसनीयता के साथ–साथ डिस्कॉम की वित्तीय और परिचालन दक्षता में सुधार लाना है। इन मुद्दों को हल करने के लिए, उपभोक्ताओं को स्मार्ट प्रीपेड मीटरिंग, हाई वोल्टेज डिस्ट्रीब्यूशन प्रणाली, री–कंडक्टरिंग, फीडर पृथक्करण, आईटी–ओटी समाधानों का कार्यान्वयन और विभिन्न नीतिगत और संरचनात्मक सुधारों जैसे कदमों को अपनाने की योजना बनाई गई है, जिसमें हानि में कमी पर प्रमुख ध्यान दिया गया है। इसके अलावा, कृषि फीडरों को सौर ऊर्जा से चलाना, नेटवर्क ऊर्जा हानियों में कमी और उन्नत एआई/एमएल के उपयोग के साथ बेहतर मांग पूर्वानुमान क्षेत्र के डीकार्बोनाइजेशन लक्ष्य में योगदान मिलेगा। वर्तमान में, योजना के तहत स्मार्ट मीटरिंग और हानि कम करने के कार्यों के कार्यान्वयन के लिए 23 राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है, जबकि कुछ अन्य अनुमोदन के विभिन्न चरणों में हैं। शेष राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के लिए अगले छह से आठ सप्ताह में मंजूरी मिलने की आशा है।

पिछले एक वर्ष में आरईसी की प्रमुख उपलब्धियां क्या रही हैं?

आरईसी ने वित्तीय वर्ष 2021–22 के दौरान सभी प्रमुख निष्पादन संकेतकों पर असाधारण रूप से बेहतर प्रदर्शन किया है। कोविड–19 के बावजूद, मजबूत क्रेडिट प्रोफाइल और लोन के विविध स्रोतों तक पहुंच के कारण हमारी नकदी स्थिति पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा। वित्तीय वर्ष 2021–22 के लिए टैक्स के बाद प्रॉफिट और कुल इनकम क्रमशः 100.46 बिलियन रुपये और 392.30 बिलियन रुपये थी। 31 मार्च, 2022 को आरईसी की लोन एसेट बुक बढ़ कर 3,853.71 बिलियन रुपये हो गई। कंपनी की नेट वर्थ में भी 17 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई, जो 31 मार्च, 2022 को 509.86 बिलियन रुपये तक पहुंच गई। कंपनी ने पब्लिक सेक्टर में अपनी समकक्ष कंपनियों की तुलना में निरंतर बेहतर प्रदर्शन किया है। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि आरईसी 2020–21 के एमओयू मापदंडों पर ''उत्कृष्ट'' रेटिंग के साथ 100 अंक हासिल करने वाला देश का एकमात्र सीपीएसई बना। हम अपनी लोन देने की दरों में तीन बार कटौती करने में सफल रहे हैं और हमें उम्मीद है कि इससे हमारे कारोबार के साथ–साथ समग्र रूप से भारतीय विद्युत क्षेत्र को भी बढ़ावा मिलेगा। इसके अलावा, आरईसी विदेशी बाजारों से सफलतापूर्वक संसाधन जुटा रहा है। एक ऐतिहासिक लेनदेन में, आरईसी ने 1,175 मिलियन डॉलर जुटाए, जो किसी भी भारतीय एनबीएफसी द्वारा अंतर्राष्ट्रीय बैंक लोन बाजार में जुटाया गया सबसे बड़ा सिंडीकेट लोन है। हमने इंडो–जर्मन द्विपक्षीय साझेदारी के तहत 169.5 मिलियन डॉलर का ओडीए टर्म लोन प्राप्त करने के लिए केएफडब्ल्यू डेवलपमेंट बैंक के साथ एक समझौता भी किया है। भारत में प्रतिस्पर्धी ब्याज दरों पर नवाचारी सौर पीवी प्रौद्योगिकी–आधारित उत्पादन परियोजनाओं के आंशिक वित्तपोषण के लिए इसका उपयोग किया जाएगा।

भविष्य में आरईसी के प्रमुख फोकस वाले क्षेत्र क्या होंगे? आरईसी किन नए अवसरों को तलाश रही है?

महारत्न सीपीएसई बनने के बाद आरईसी के सामने कारोबार के नए अवसर आ रहे हैं। इसमें बहुत सारी जिम्मेदारी भी शामिल है क्योंकि यह दर्जा कुछ चुनिंदा सीपीएसई को ही प्रदान किया गया है। इसे और क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए आगामी नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं (सौर, पवन, लघु पनविद्युत, बायोमास) को चलाने, बड़ी पनविद्युत परियोजनाओं, सौर रूफ–टॉप परियोजनाओं और सौर पार्कों में निवेश जैसे विभिन्न नए अवसर सामने हैं। कुसुम परियोजनाओं (ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा संयंत्र) में इस निवेश के अलावा, मौजूदा ताप विद्युत संयंत्रों का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण, पुराने विद्युत संयंत्रों का प्रतिस्थापन और एफजीडी जैसे प्रदूषण नियंत्रण उपकरण की स्थापना कंपनी के विविधीकृत पोर्टफोलियो का हिस्सा होंगे। आरईसी थर्मल पावर स्टेशनों को कोयले की कुशल आपूर्ति के लिए समर्पित अपस्ट्रीम बुनियादे ढांचे को वित्तपोषित करने पर भी विचार कर रही है। कंपनी ने कोयला खदानों के विकास के लिए वित्तीय परिचालन पहले ही शुरू कर दिया है।

देश में ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम भी 24x7 विद्युत की मांग को पूरा करने के लिए और अधिक मजबूती के साथ तैयार हो रहा है, इस प्रकार नेटवर्क संवर्धन और विस्तार, भूमिगत केबलिंग, स्मार्ट मीटर/उपकरण, एएमआई/एएमआर बुनियादी ढांचे और स्मार्ट ग्रिड में नए निवेश की आवश्यकता है। टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली मार्ग के तहत समर्पित ग्रीन

कॉरिडोर और नए नेटवर्क के निर्माण में भी निवेश की आवश्यकता होगी। सर्वत्र घरेलू विद्युतीकरण के लिए सरकार की सौभाग्य योजना की सफलता को देखते हुए, उपभोक्ताओं के स्तर पर विद्युत की मांग और अधिक बढ़ेगी। आगामी व्यावसायिक अवसरों का लाभ उठाने और अपने स्टेकहोल्डर्स के लिए अधिकतम रिटर्न प्राप्त करने के लिए, आरईसी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों, केआईडब्ल्यू, जेआईसीए, विश्व बैंक, आईएफसी, एशियाई विकास बैंक और एसडीई सहित बहुपक्षीय विकास संगठनों के साथ बेहतर साझेदारी बना रही है। यह कंपनी को प्रतिस्पर्धी दरों पर संसाधन जुटाने और सर्वोत्तम अंतर्राष्ट्रीय प्रथाओं के अनुरूप काम करने में सक्षम बनाएगा। आने वाले वर्षों में, आरईसी देश और देश के बाहर विद्युत क्षेत्र के विकास में अग्रणी रहेगी। अपनी व्यावसायिक रणनीति के एक भाग के रूप में, आरईसी ने भूटान में खोलोंगछू हाइड्रो एनर्जी लिमिटेड की 600 मेगावाट की जलविद्युत परियोजना के लिए लोन स्वीकृत किया है। हम सही समय पर न केवल एक फंडिंग पार्टनर के रूप में, बल्कि अपनी सहायक कंपनियों और संयुक्त उपक्रमों के माध्यम से भी नए उभरते क्षेत्रों में प्रवेश करके विविधता लाने के बारे में भी विचार कर रहे हैं, आरईसी बाजार में हो रहे और आगे होने बदलावों पर नजर बनाए हुए है और अपने स्टेकहोल्डर्स के लिए मूल्य को अधिकतम करने हेतु सही समय पर उचित निर्णय लेगी।

विद्युत क्षेत्र के लिए आपका आगे सामान्यतः क्या दृष्टिकोण है?

कोविड–19 महामारी से जहां कारोबार और उद्योग के सामने कई चुनौतियां आई हैं, वहीं इससे विद्युत क्षेत्र में सुधार के कई अवसर भी मिले हैं। डिस्कॉम के बुनियादी ढांचे के उन्नयन के लिए 3 ट्रिलियन रुपये से अधिक की परिणाम और सुधार–संबद्ध वित्तीय पैकेज एक दूरदर्शी योजना है, जो डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर के विकास में सहायता करेगी। उपभोक्ताओं को अपना विद्युत आपूर्तिकर्ता चुनने का प्रस्ताव देने और साथ ही डिस्ट्रीब्यूशन सेक्टर में निजी क्षेत्र की भागीदारी बढ़ाने के लिए सरकार की मंशा से प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा मिलेगी और दक्षता में सुधार में आसानी होगी। इनविट मॉडल के माध्यम से ट्रांसमिशन परिसंपत्तियों का मुद्रीकरण एक आशाजनक कदम है, जो विद्युत उत्पादन की तीव्र गति और बढ़ती मांग से मेल खाने के लिए ट्रांसमिशन क्षमता को जोड़ने में मदद करेगा। नवीकरणीय ऊर्जा, हाइड्रोजन आधारित ऊर्जा और स्मार्ट मीटरिंग की ओर परिवर्तन के लिए महत्वाकांक्षी योजनाएं तैयार की गई हैं। नवीकरणीय ऊर्जा के विकास में सहयोग करने के लिए घरेलू विनिर्माण का विस्तार आवश्यक है। सौर सेल और पैनल के लिए चरणबद्ध स्थानीय निर्माण योजना लंबे समय में सौर सेल और मॉड्यूल के लिए आयात पर निर्भरता को कम करने में मदद करेगी, और आत्मनिर्भर भारत में योगदान देगी। बैटरी विनिर्माण के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना नवीकरणीय ऊर्जा और ई–मोबिलिटी क्षेत्रों के लिए सकारात्मक प्रभाव के साथ देश में स्टोरेज विनिर्माण के लिए पारिस्थितिकी तंत्र को भी बढ़ाएगी। साथ ही, हमें क्षेत्र के दबाव वाले एसेट्स को कम करने की दिशा में काम करना होगा। हमें, नवीकरणीय ऊर्जा निवेश में निजी क्षेत्र के अग्रणी होने तथा पारंपरिक और परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में पब्लिक सेक्टर से बड़े निवेश की आशा है।

(पावर लाइन मैग्जीन में प्रकाशित इंटरव्यू का हिंदी अनुवाद)

आरईसी के निदेशक (वित्त) से साक्षात्कार

श्री अजय चौधरी
निदेशक (वित्त)

1. आरईसी को हाल ही में 'महारत्न' का प्रतिष्ठित दर्जा प्राप्त हुआ है। आप इस उपलब्धि को कैसे देखते हैं? 1969 में आरईसी की स्थापना के बाद से इसके विकास के बारे में कुछ बताएं।

सरकार ने 1969 में सूखे के कठिन समय में सिंचाई की जरूरत को पूरा करने के लिए कृषि पंप–सेटों को बिजली प्रदान करके मॉनसून पर कृषि की निर्भरता को कम करने का प्रयास किया। इस तरह से आरईसी लिमिटेड अस्तित्व में आया था। उस समय आरईसी का उद्देश्य कृषि पंप–सेटों को वित्तपोषण करके राष्ट्र की तत्कालीन जरूरतों को पूरा करना था।

उसके बाद, आरईसी ने नए–नए क्षेत्रों में काम करना शुरू किया और विद्युत क्षेत्र के प्रमुख वित्तीय आधार के रूप में स्थापित हुआ। यह आरईसी के लिए गौरव की बात है कि इसकी फंडिंग से देश के ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन नेटवर्क के 7 लाख एमवीए से अधिक ट्रांसफॉर्मेशन क्षमता के बड़े हिस्से के वित्तपोषण में मदद मिली है। जनरेशन के मामले में, कंपनी ने राज्य–क्षेत्र की 85,000 मेगावाट से अधिक की पारंपरिक ऊर्जा क्षमता का वित्तपोषण किया है।

आरईसी के पोर्टफोलियो में लगातार वृद्धि हुई है और इसने रिकॉर्ड प्रदर्शन के द्वारा लगातार बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। वित्तीय वर्ष 2022 में कंपनी ने 10,046 करोड़ रुपये का नेट एनुअल प्रॉफिट दर्ज किया जो आरईसी के पूरे इतिहास में अब तक का सबसे अधिक प्रॉफिट है। वित्तीय वर्ष 2022 की पहली तिमाही के दौरान, आरईसी को 2,447 करोड़ रुपये का नेट प्रॉफिट हुआ, जबकि इसकी लोन बुक बढ़कर 3.87 लाख करोड़ रुपये हो गई है। इस तरह अब आरईसी की नेट वर्थ 52,000 करोड़ रुपये से अधिक हो गई है (30 जून, 2022 तक)।

आरईसी सरकार की प्रमुख सहयोगी है और आरईसी को सरकार की कई प्रमुख योजनाओं जैसे कि प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना (सौभाग्य), दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (डीडीयूजीजेवाई) और हाल ही में शुरू की गई संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) के लिए नोडल एजेंसी नियुक्त किया गया है।

अपनी निरंतर ऑपरेशनल और बिजनेस उत्कृष्टता के कारण, आरईसी को हाल ही में 'महारत्न' का दर्जा प्राप्त हुआ है – जो सार्वजनिक क्षेत्र के किसी भी केंद्रीय उपक्रम (सीपीएसई) के लिए सर्वोच्च मान्यता है।

2. आपके संगठन के विकास में टेक्नॉलॉजी/डिजिटल बदलाव ने क्या भूमिका निभाई है?

संगठन के विभिन्न कार्यालयों में डेटा और फाइलें भेजना आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए, आरईसी ने बिजनेस संबंधी सभी प्रमुख कार्यों के लिए सफलतापूर्वक ई–ऑफिस सिस्टम लागू किया है। इससे आरईसी के सभी कार्यालयों में डेटा और सूचनाएं भेजने में आसानी हुई है।

टेक्नॉलॉजी का उपयोग समय के साथ तेजी से बढ़ा है और अब यह ऑपरेशनल स्ट्रैट्जी का एक अभिन्न अंग है। इसके अलावा, हाल के समय में साइबर अटैक्स की घटनाएँ तेजी से बढ़ी हैं और वित्तीय क्षेत्र के मामले में मजबूत साइबर सिक्योरिटी/आसान फ्रेमवर्क स्थापित करने की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता को देखते हुए, आरईसी ने अपनी साइबर सिक्योरिटी इन्फ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक टेक्नॉलॉजी के साथ पुनर्निर्मित किया है ताकि महत्वपूर्ण बिजनेस एसेट्स की सुरक्षा को सुनिश्चित किया जा सके।

3. अगले 3 से 5 वर्षों के लिए आपकी कंपनी की ग्रोथ स्ट्रैट्जी क्या है?

आरईसी अब एक 'महारत्न' सीपीएसई है और बिजनेस के नए अवसरों पर काम करने के लिए यह तैयार है; चूंकि 'महारत्न' का दर्जा कुछ प्रमुख सीपीएसई को ही दिया गया है, इसलिए इसमें जिम्मेदारियाँ भी बहुत हैं। इस क्षेत्र की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, इसके सामने कई नए अवसर आ रहे हैं जिनमें आगे की नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं (सौर, पवन, लघु जल, बायोमास) को ऊर्जा प्रदान करना, बड़ी हाइड्रो परियोजनाओं, सोलर रूफ टॉप परियोजनाओं और सोलर पार्क में निवेश करना शामिल हैं।

इसके अलावा, कुसुम परियोजनाओं (ग्रिड से जुड़े सौर ऊर्जा संयंत्र) में निवेश, मौजूदा ताप ऊर्जा संयंत्रों का नवीनीकरण और आधुनिकीकरण, पुराने विद्युत संयंत्रों को बदलना और एफजीडी (फ्लू–गैस डीसल्फराइजेशन) जैसे प्रदूषण नियंत्रण उपकरणों की संस्थापना भी कंपनी के विविध पोर्टफोलियो का एक हिस्सा होगा। आरईसी द्वारा थर्मल पावर स्टेशनों को कोयले की बेहतर आपूर्ति के लिए अपस्ट्रीम इन्फ्रास्ट्रक्चर को वित्तपोषित करने पर भी विचार किया जा रहा है। कंपनी ने कोयला खदानों के विकास–कार्यों का वित्तपोषण पहले ही शुरू कर दिया है।

(डन एंड ब्रैडस्ट्रीट मैग्जीन में प्रकाशित इंटरव्यू का हिंदी अनुवाद)

श्री वी. के. सिंह
निदेशक (तकनीकी)

संदेश

आजादी के बाद संविधान सभा द्वारा हिंदी को देश की राजभाषा का दर्जा इसीलिए दिया गया था, क्योंकि हिंदी देश के अधिकांश क्षेत्रों में प्रयोग की जाती थी। स्वाधीनता संग्राम के दौर में यह देश की प्रमुख संपर्क भाषा के रूप में प्रचलित हुई थी। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और देश के अन्य नेताओं ने इसीलिए अपने विचारों का प्रचार–प्रसार करने के लिए हिंदी को माध्यम बनाया। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने भिन्न–भिन्न भाषाओं वाले हमारे देश में राष्ट्रीयता की भावना को सुदृढ़ किया।

आरईसी ने देश के सभी गांवों और घरों के विद्युतीकरण द्वारा राष्ट्र की सेवा का एक लंबा सफर तय किया है। पिछले पांच दशकों में, कंपनी ने पूरे देश में जेनरेशन, ट्रांसमिशन और डिस्ट्रीब्यूशन प्रोजेक्ट्स की फाइनेंसिंग में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सरकार के विभिन्न फ्लैगशिप कार्यक्रमों में भी कंपनी द्वारा सहयोग किया गया है जिसमें दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना– डीडीयूजीजेवाई और प्रधानमंत्री सहज बिजली हर घर योजना– 'सौभाग्य' उल्लेखनीय हैं। सरकार की नई संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (आरडीएसएस) के लिए भी आरईसी को नोडल एजेंसी बनाया गया है।

मुझे पूरा भरोसा है कि जिस प्रकार देश के विद्युतीकरण द्वारा हमने राष्ट्र के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान दिया है उसी प्रकार राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी हम अपना पूरा सहयोग देंगे। सभी कार्मिकों से मेरा आग्रह है कि वे अपने काम–काज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि आरईसी की हिंदी पत्रिका 'ऊर्जायन' के नए अंक का प्रकाशन हो रहा है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

लेख

ग्रीन हाइड्रोजनः भविष्य की ऊर्जा

हाइड्रोजन का उद्योग के साथ पुराना संबंध है। इसका इस्तेमाल 19वीं सदी की शुरुआत से ही कारों, हवाई जहाजों और अंतरिक्ष यानों को ईंधन देने के लिए किया जाता रहा है। विश्व अर्थव्यवस्था का डीकार्बोनाइजेशन और ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग आज की दुनिया की सबसे बड़ी जरूरत है जिसे अब और टाला नहीं जा सकता है। हालांकि ग्रीन हाइड्रोजन की उत्पादन लागत अधिक है पर विश्व हाइड्रोजन परिषद के अनुमान के अनुसार 2030 तक इसमें 50% की कमी आ सकती है। अगर ऐसा होता है तो ग्रीन हाइड्रोजन भविष्य के ईंधन का सबसे अच्छा विकल्प बन सकता है।

कैसे बनता है ग्रीन हाइड्रोजन

ग्रीन हाइड्रोजन की तकनीक हाइड्रोजन के उत्पादन पर आधारित है। यह सब जगह पाया जाने वाला एक हल्का और अत्यधिक प्रतिक्रियाशील ईंधन है जिसे इलेक्ट्रोलिसिस प्रक्रिया के द्वारा बनाया जाता है। इलेक्ट्रोलिसिस प्रक्रिया पानी में ऑक्सीजन से हाइड्रोजन को अलग करने के लिए बिजली के प्रवाह का उपयोग करती है और यदि बिजली नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त की जाती है, तो हम वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड का उत्सर्जन किए बिना ऊर्जा का उत्पादन कर सकते हैं।

क्लीन एनर्जी का बेहतर और सस्ता विकल्प

हाइड्रोजन वातावरण में पाया जाने वाला सबसे प्रचुर रासायनिक तत्व है, जैसा कि IEA ने उल्लेख किया है, ईंधन के रूप में उपयोग के लिए हाइड्रोजन की वैश्विक मांग 1975 से तीन गुना अधिक हो गई है और 2018 में प्रति वर्ष 70 मिलियन टन तक पहुंच गई है। ग्रीन हाइड्रोजन क्लीन एनर्जी का स्रोत है जो सिर्फ जल वाष्प का उत्सर्जन करता है। हवा, कोयले और तेल की तुलना में इस ईंधन के उपयोग के बाद कोई अवशेष नहीं बचता है।

ग्रीन हाइड्रोजन के फायदे और नुकसान

ग्रीन हाइड्रोजन ऊर्जा स्रोत के पक्ष और विपक्ष दोनों पहलू हैं। अच्छे पहलू ये हैं कि यह 100% टिकाऊ है। ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन या उपयोग के दौरान प्रदूषण फैलाने वाली गैसों का उत्सर्जन नहीं करता है।

दूसरा यह स्टोर किया जा सकता है। इसे स्टोर करना आसान है, इसलिए इसे बाद में अन्य उद्देश्यों के लिए उपयोग हेतु स्टोर किया जा सकता है। ग्रीन हाइड्रोजन को बिजली या सिंथेटिक गैस में बदला जा सकता है और वाणिज्यिक या औद्योगिक उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाया जा सकता है।

ग्रीन हाइड्रोजन के कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं, जैसे इसे बनाने में खर्च अधिक आता है। जो इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से ग्रीन हाइड्रोजन उत्पन्न करने के लिए नवीकरणीय स्रोतों से ऊर्जा का उत्पादन अधिक महंगा है। साथ ही, हाइड्रोजन और विशेष रूप से ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन में अन्य ईंधनों की तुलना में अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। इसे अधिक सावधानी से उपयोग करना होता है क्योंकि यह अधिक अस्थिर और ज्वलनशील है और इसलिए रिसाव और विस्फोट को रोकने के लिए अधिक सुरक्षा उपायों की आवश्यकता होती है।

विकसित देशों द्वारा प्रोत्साहन

ग्रीन हाइड्रोजन को अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और जर्मनी जैसे देशों में ईंधन के रूप में अधिक बढ़ावा दिया जा रहा है। जापान जैसे देश तो हाइड्रोजन इकोनोमी बनने का लक्ष्य रखकर काम कर रहे हैं।

बिजली और पेयजल जनरेटर

इन दो तत्वों को एक ईंधन सेल में एक साथ हाइड्रोजन और ऑक्सीजन पर प्रतिक्रिया करके प्राप्त किया जाता है। यह प्रक्रिया अंतरिक्ष मिशनों पर बहुत उपयोगी साबित हुई है इसकी सहायता से स्पेस मिशन की टीम को पानी और बिजली दी जा सकती है।

ऊर्जा के स्टोरेज में आसानी

हाइड्रोजन टैंक लंबे समय तक ऊर्जा को स्टोर कर सकते हैं। लिथियम–आयन बैटरी की तुलना में इनका रख–रखाव भी आसान होता है क्योंकि वे हल्के होते हैं। हाइड्रोजन का उपयोग भारी परिवहन, विमानन और समुद्री परिवहन जैसे क्षेत्रों में अधिक उपयोगी है जहां डीकार्बोनाइजेशन करना बहुत मुश्किल है। इस क्षेत्र में पहले से ही कई परियोजनाएं चल रही हैं, जैसे हाइकारस और क्रायोप्लेन, जिन्हें यूरोपीय संघ (ईयू) द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। इसका उद्देश्य यात्री विमानों के लिए इसका उपयोग करना है।

इबरड्रोला (Iberdrola) 60 से अधिक प्रोजेक्ट्स के साथ ग्रीन हाइड्रोजन के क्षेत्र में प्रमुख रूप से कार्यरत है। ऊर्जा ट्रांजिशन की अपनी प्रतिबद्धता में, इबरड्रोला डीकार्बोनाइजेशन की जरूरतों के समाधान के लिए 08 देशों (स्पेन, यूनाइटेड किंगडम, ब्राजील, संयुक्त राज्य अमेरिका एवं अन्य) में 60 से अधिक प्रोजेक्ट्स के साथ ग्रीन हाइड्रोजन के विकास का नेतृत्व कर रहा है। जैसा कि 20 साल पहले नवीकरणीय एनर्जी के क्षेत्र में हुआ था। कंपनी इस नई तकनीकी चुनौती में सबसे आगे बढ़कर काम कर रही है जिसमें हरित हाइड्रोजन का उत्पादन और आपूर्ति शामिल है। इबरड्रोला के प्रोजेक्ट्स स्पेन और यूनाइटेड किंगडम में इंडस्ट्री, भारी परिवहन के डीकार्बोनाइजेशन में सहयोग करेंगे। कंपनी के पास 2025 तक 2,400 मेगावाट का एक बड़ा प्रोजेक्ट पोर्टफोलियो है और 2030 तक प्रति वर्ष 350,000 टन ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन की उम्मीद है। इसके अलावा, इबरड्रोला ने नेक्स्ट जनरेशन ईयू प्रोग्राम को 54 प्रोजेक्ट सौंपे हैं, जो €2.5 बिलियन का निवेश लाएँगे।

पर्यावरण पर असर

ग्रीन हाइड्रोजन एक कार्बन मुक्त, मोबाइल ऊर्जा स्रोत है जो विद्युत का विकल्प बन सकता है। ग्रीन हाइड्रोजन पानी के अणुओं को इलेक्ट्रोलाइज करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करता है, जिससे इस प्रक्रिया में कोई उत्सर्जन नहीं होता है।

इससे हमारी–आपकी जिंदगी में क्या बदलाव आएगा

हाइड्रोजन के अनेक उपयोग हैं। ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग उद्योग में किया जा सकता है और घरेलू उपकरणों को बिजली देने के लिए इसे मौजूदा गैस पाइपलाइनों में संग्रहीत किया जा सकता है। बिजली का उपयोग करने वाली किसी भी चीज को बिजली देने के लिए हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन के साथ भी किया जा सकता है, जैसे कि इलेक्ट्रिक वाहन और इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और बैटरी के विपरीत, हाइड्रोजन ईंधन सेल्स को रिचार्ज करने की आवश्यकता नहीं होती है और जब तक उनके पास हाइड्रोजन ईंधन होता है, तब तक वे लो नहीं होते हैं।

भारत में अभी ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग कहां–कहां हो रहा है

देश में पिछले कुछ समय में ऑटो, पेट्रोलियम रिफाइनिंग और स्टील जैसे क्षेत्रों में ग्रीन हाइड्रोजन का लाभ उठाने का ठोस प्रयास किया जा रहा है। अप्रैल 2022 में, राज्य के स्वामित्व वाली ऑयल इंडिया लिमिटेड ने जोरहाट, असम में भारत का पहला 99.99 प्रतिशत शुद्ध ग्रीन हाइड्रोजन संयंत्र चालू किया। इस मिशन में, इस्पात क्षेत्र को स्टेकहोल्डर बनाया गया है। वहीं, डायरेक्ट रिड्यूस्ड आयरन (DRI) उत्पादन में ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग करने की व्यवहार्यता का पता लगाने के लिए सरकार से आंशिक वित्त पोषण के साथ पायलट प्लांट स्थापित करने का प्रस्ताव दिया गया है। केरल ने अपने हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था मिशन के लिए एक रणनीतिक रोडमैप, नीति निर्माण और कार्यान्वयन योजनाओं को तैयार करने के लिए एक उच्च–स्तरीय कार्य समूह की स्थापना की है, जिसका लक्ष्य ग्रीन हाइड्रोजन में निवेश को सुविधाजनक बनाने और राज्य को ''हरित हाइड्रोजन केंद्र'' बनाना है। टाटा मोटर लिमिटेड के सहयोग से इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड के अनुसंधान एवं विकास केंद्र ने पहले हाइड्रोजन फ्यूल सेल बसों का परीक्षण किया था। रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड, अडानी एंटरप्राइजेज, जेएसडब्ल्यू एनर्जी और एक्मे सोलर जैसी कंपनियों के पास भी ग्रीन हाइड्रोजन के इस्तेमाल करने की योजना है। अडानी समूह ने इस बारे में घोषणा की थी कि वह "दुनिया का सबसे बड़ा ग्रीन हाइड्रोजन इकोसिस्टम" बनाने के लिए संयुक्त रूप से फ्रांस की एक कंपनी के साथ मिलकर काम करेगा। अमेरिका स्थित ओहमियम इंटरनेशनल ने भी कर्नाटक में भारत की पहली ग्रीन–हाइड्रोजन फैक्ट्री शुरू की है।

कुल मिलकर दुनिया भर में ग्रीन हाइड्रोजन को लेकर अनेक प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं। आने वाले समय में ग्रीन हाइड्रोजन ऊर्जा का सबसे बड़ा विकल्प बनकर उभरेगा। प्रकृति और लोगों के जीवन के लिए यह किसी वरदान से कम नहीं होगा।

गोविंद सैनी
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

लेख

फादर कामिल बुल्के: एक यूरोपीय हिंदी प्रेमी और रामकथा के विद्वान

हालांकि फादर कामिल बुल्के (1909–1982) बेल्जियम के एक पादरी थे। जब वे 1934 में भारत आए थे तब उनकी आयु मात्र 26 वर्ष थी और उनका उद्देश्य भारत में ईसाई धर्म का प्रचार–प्रसार करना था परंतु उन्होंने अपना पूरा जीवन हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार और रामकथा के ऊपर शोध करने में समर्पित कर दिया। इनके पिता का नाम अडोल्फ और माता का नाम मारिया बुल्के था। इनका बचपन अभाव और संघर्ष में बीता परंतु इन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और ल्यूवेन विश्वविद्यालय से ग्रेजुएशन किया। आगे चलकर ये एक जेसुइट बन गए।

1835 में लॉर्ड थॉमस मैकाले ने देशी भाषाओं की जगह अंग्रेजी को भारतीय शिक्षा का मुख्य माध्यम बनाया और उसी के सुझाव पर ही ब्रिटिश सरकार ने अपनी भाषा और ज्ञान–विज्ञान को हमारे देश पर जबरन लागू किया तथा हमें सांस्कृतिक रूप से पराधीन बनाने का काम किया। मैकाले के अनुसार विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान यूरोपीय सभ्यता और अंग्रेजी में निहित था।

यद्यपि मैकाले की इस नीति से यूरोपीय विद्वान ही सहमत नहीं हुए और वहां के कई विद्वानों ने तो अपना पूरा जीवन यहां के ज्ञान–विज्ञान और विविधता को दुनिया के सामने लाने में लगा दिया। फादर कामिल बुल्के भी ऐसे ही विद्वानों में से एक थे। उन्हें छात्र जीवन से ही देशज भाषाओं से बेहद लगाव था। इनके अपने देश के उत्तरी बेल्जियम में फ्लेमिश बोली जाती थी जो डच भाषा का ही स्थानीय संस्करण थी परंतु वहां दक्षिणी प्रदेश में फ्रेंच का बोलबाला था, जो बेल्जियम के संभ्रांत वर्ग की भाषा थी। बाद में फ्रेंच भाषा के वर्चस्व को लेकर यहाँ एक बड़ा आंदोलन हुआ था और कामिल बुल्के ने इस आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया था। इससे उनकी पहचान एक छात्र नेता की बन गई थी। इसी आंदोलन ने उनमें अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति एक विशेष लगाव विकसित किया और उनके भारत आने के बाद उनका जीवन इसी दिशा में व्यतीत हुआ। अपनी एक पुस्तक में फादर कामिल बुल्के ने लिखा है– ***'जब मैं भारत पहुंचा तो मुझे यह देखकर आश्चर्य और दु:ख हुआ, कि इस देश के शिक्षित लोग भी अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से अनजान थे और वो अंग्रेजी भाषा में बोलना गर्व की बात समझते थे।'*** उन्होंने इस मानसिकता को नकारा और यहां की स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान तथा साहित्य को दुनिया के सामने लाने का निश्चय किया।

भारत आने के बाद वे शुरू में मुंबई और दार्जिलिंग में रहे। फिर उन्होंने झारखंड के गुमला में पांच साल तक गणित विषय के अध्यापक के रूप में कार्य किया। यहीं पर इन्होंने कई भारतीय भाषाएँ सीखीं। उन्हें पालि, प्राकृत और अपभ्रंश भाषा की भी अच्छी

जानकारी थी। बाद में वे रांची के संेंट जेवियर्स कॉलेज में हिंदी और संस्कृत विषय के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त हुए।

फादर कामिल बुल्के ने हिंदी और अन्य भाषाओं में कई पुस्तकें लिखीं परंतु उनकी सबसे मशहूर कृति **अंग्रेजी–हिंदी शब्दकोश** है। प्रकाशित होने के 49 वर्ष बाद भी यह अंग्रेजी–हिंदी का सबसे प्रामाणिक शब्दकोश माना जाता है। यह शब्दकोश उनके 30 वर्षों के गहन अध्ययन का जीवंत दस्तावेज है। ज्यादातर लोग तो उन्हें इस शब्दकोश के लिए ही जानते हैं।

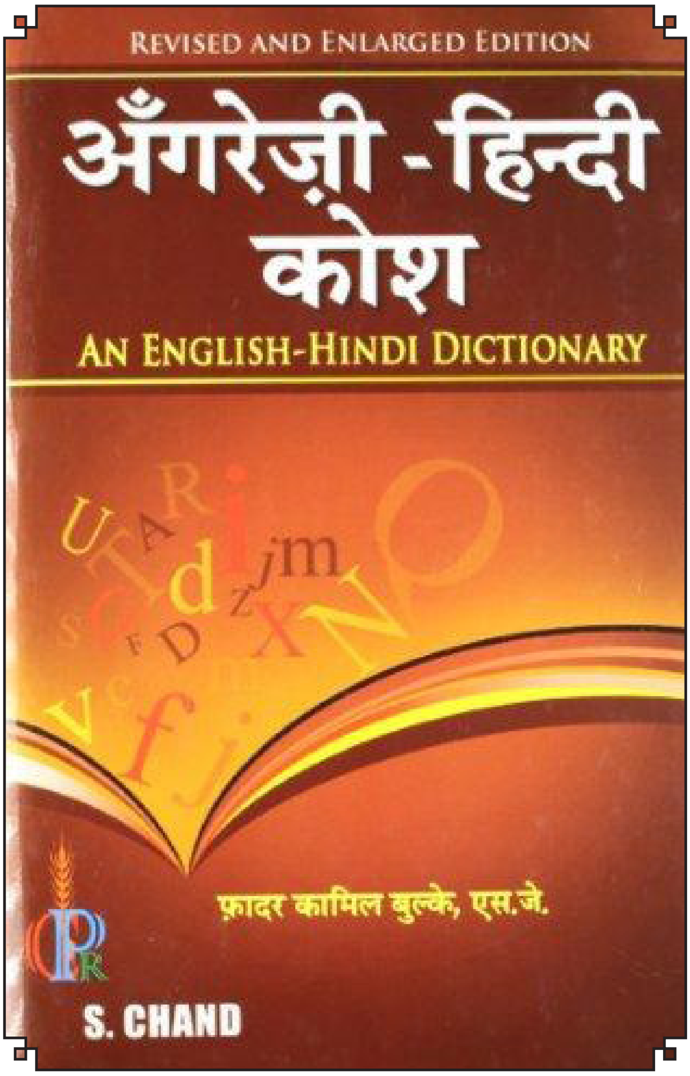

भारत में अपने प्रवास के दौरान फादर कामिल बुल्के ने अनेक विश्वविद्यालयों से प्राचीन भारतीय साहित्य, दर्शन, आध्यात्मिक ज्ञान और संस्कृत विषय का अध्ययन किया तथा हिंदी साहित्य में डॉक्टरेट की उपाधि हासिल की। उनके शोध का विषय **'राम कथा की उत्पत्ति और विकास' (Development of the Tale of Rama)** था। वे खुद अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, लैटिन और ग्रीक भाषाओं में सहज थे परंतु उन्होंने अपने शोध निर्देशक तथा उस समय के हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान माता प्रसाद गुप्त से कहा कि वे अपनी थीसिस हिंदी में ही लिखेंगे।

यह एक रोचक तथ्य है कि किसी ईसाई मिशनरी की सबसे अच्छी रचना फादर कामिल बुल्के द्वारा लिखी गई 'रामकथा: उत्पत्ति और विकास' है जो एक हिंदू देवता पर आधारित है। हालांकि उन्होंने इस विषय पर अपनी थीसिस लिखी थी लेकिन बाद में भी वे इस विषय पर 18 वर्षों तक अध्ययन करते रहे और इस अध्ययन को एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया। इस पुस्तक के विषय में उनके गुरु और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. धीरेंद्र वर्मा ने लिखा है– ***'इसे रामकथा संबंधी समस्त सामग्री का विश्वकोश कहा जा सकता है। वास्तव में यह शोध पत्र अपने ढंग की पहली रचना है। हिंदी क्या किसी भी यूरोपीय या भारतीय भाषा में इस प्रकार का कोई दूसरा अध्ययन उपलब्ध नहीं है।'***

फादर कामिल बुल्के की नजर में हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसीदास थे। तुलसीदास की रचनाओं को समझने के लिए ही उन्होंने अवधी और ब्रज भाषा सीखी थी। हिंदू देवता 'राम' के बारे में फादर कामिल बुल्के ने लिखा है कि ***'राम वाल्मीकि के कल्पित पात्र नहीं बल्कि एक इतिहास पुरुष थे। उनका मानना था कि उनके बारे में कालक्रम में थोड़ी***

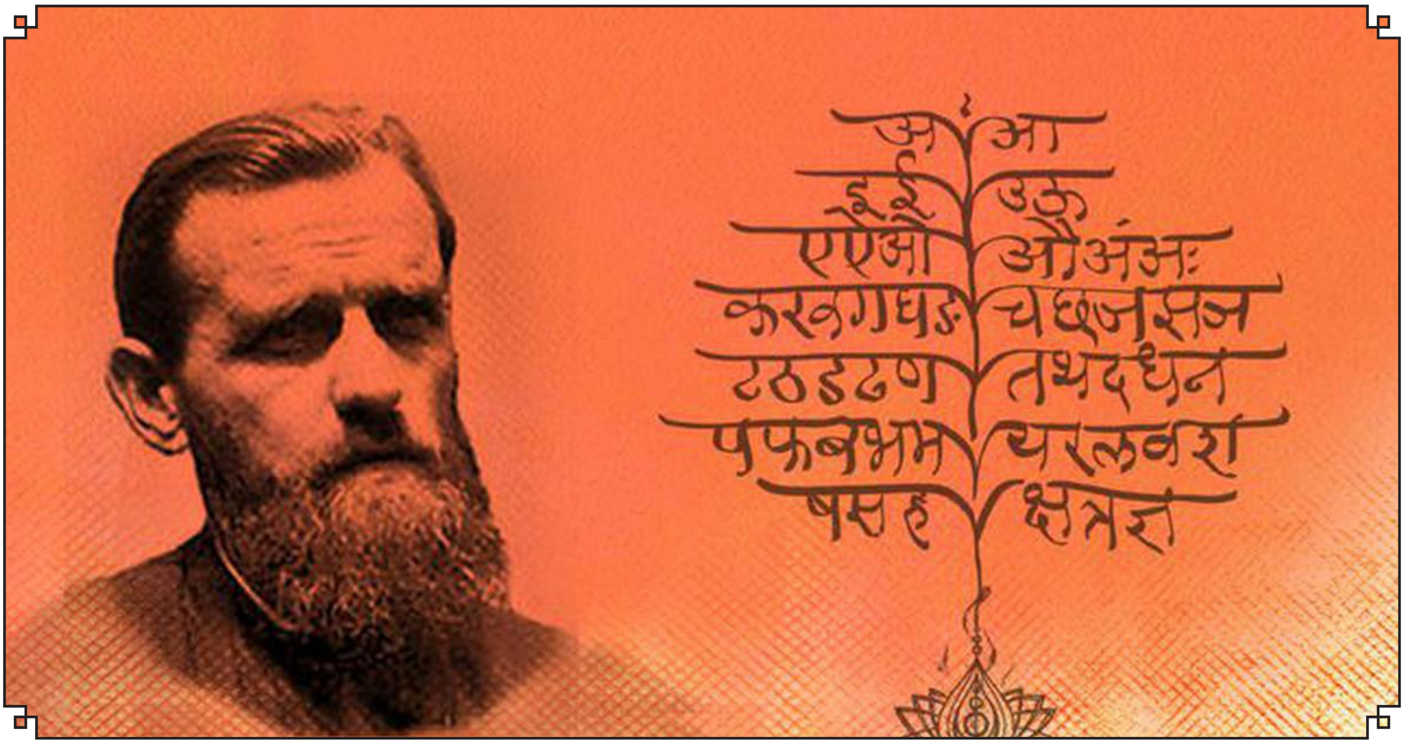

बहुत चूक हो सकती है, लेकिन वे कोई मिथकीय पात्र नहीं हैं। उन्होंने कई उदाहरणों से साबित किया कि रामकथा एक अंतरराष्ट्रीय कथा है जो वियतनाम से लेकर इंडोनेशिया तक फैली है।' उन्होंने यह भी लिखा कि '***रामायण केवल धार्मिक साहित्य नहीं बल्कि जीवन जीने का दस्तावेज भी है।'***

फादर कामिल बुल्के ने ईसाई धर्म के ऊपर भी हिंदी में कई पुस्तकें लिखीं और बाइबिल का हिंदी में अनुवाद किया।

भारत सरकार द्वारा फादर कामिल बुल्के को 1950 में भारत की नागरिकता प्रदान की गई और 1974 में उन्हें हिंदी की अप्रतिम सेवा के लिए पद्मभूषण की उपाधि भी प्रदान की गई। पूरा हिंदी जगत हिंदी भाषा के विकास और प्रचार–प्रसार के लिए फादर कामिल बुल्के को हमेशा याद रखेगा।

सुमित सिंह
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

लेख

निर्णय लेने के तीन आयाम

कहा जाता है कि निर्णय लेने से पहले सौ बार सोचो क्योंकि व्यक्ति द्वारा उठाया गया हर कदम उसके निर्णय का ही नतीजा होता है। बिना निर्णय के कोई कदम नहीं होता।

जीवन स्थितियों का अनुक्रम है। जीवन की हर स्थिति में कर्म करना पड़ता है। कुछ न करना भी एक कर्म है। कोई भी कार्य निर्णय लेने के बाद ही किया जाता है और प्रत्येक कार्य का परिणाम होता है जो जीवन को एक दिशा प्रदान करता है और वह दिशा व्यक्ति के सामने जीवन की अगली स्थिति रखती है जिसमे अगले कर्म के लिए निर्णय लेना पड़ता है।

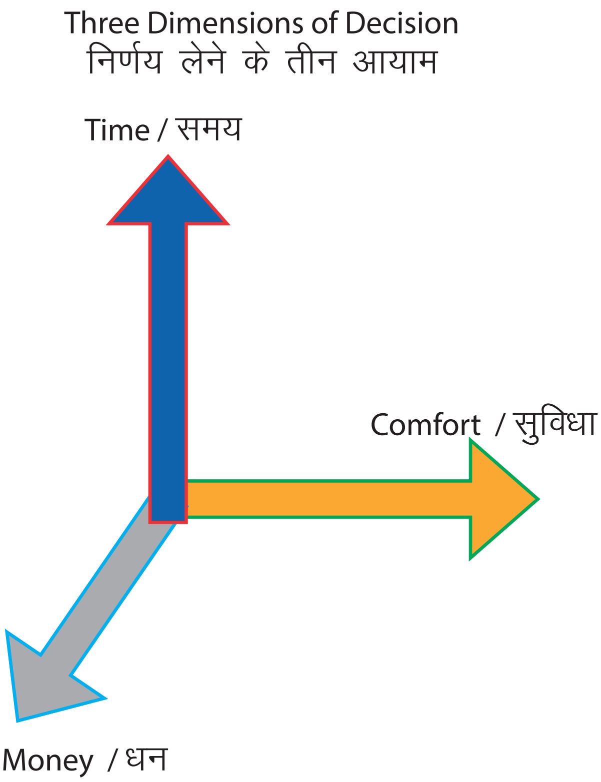

प्रत्येक व्यक्ति जो जीवन जीता है वो अतीत में उसके द्वारा लिए गए निर्णयों का परिणाम होता है। मैं इस लेख के माध्यम से जीवन की परिस्थितियों में लिए गए निर्णयों के कारणों/आयामों के बारे में अपना एक पर्यवेक्षण साझा करना चाहता हूं। किसी भी निर्णय के निम्नलिखित तीन आयाम होते हैं:

- समय
- सुविधा
- धन

किसी भी निर्णय का कारण किसी एक आयाम का चयन ही होता है। जीवन की किसी भी स्थिति में किसी भी आयाम के चयन का कारण मुख्यत: व्यक्तिगत प्राथमिकता होती है। किसी भी आयाम का चयन अन्य दो आयामों को प्रभावित करता है। यदि केवल एक आयाम पर प्रभाव पड़ता है, तो इसका अर्थ है कि दूसरे आयाम पर प्रभाव शून्य है। यह संभव नहीं है कि अन्य दो आयामों में से किसी पर भी कोई प्रभाव न पड़े। किसी प्रभाव को अल्पावधि और किसी प्रभाव को दीर्घावधि में देखा जा सकता है। यह भी संभव है कि चयनित आयाम पर भी सोच से विपरीत प्रभाव हो जाये। अन्य दो आयामों पर प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है और प्रभाव की तीव्रता बाहरी वातावरण/परिस्थितियों पर निर्भर

करती है जो किसी के नियंत्रण में नहीं हैं। कुछ लोगों का मानना है कि बाहरी वातावरण/परिस्थितियों को पिछले कर्मों का प्रभाव नियंत्रित करता है।

यदि कोई अपनी प्राथमिकता के अनुसार समय का चयन करता है, तो इसका प्रभाव उसके आराम और धन पर पड़ता है। इस पर निम्नलिखित मुहावरे हैं:

- जल्दी का काम शैतान का काम।
- Haste makes waste.
- काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।
- There is no time like present.

यदि कोई अपनी प्राथमिकता के अनुसार आराम का चयन करता है, तो इसका प्रभाव उसके समय और धन पर पड़ता है। इस पर निम्नलिखित मुहावरे हैं:

- किस–किस को याद कीजिए, किस–किस को रोइए, आराम बड़ी चीज है, मुँह ढक के सोइए।
- Life always begins with one step outside of your comfort zone.

यदि कोई अपनी प्राथमिकता के अनुसार धन का चयन करता है, तो इसका प्रभाव उसके समय और आराम पर पड़ता है। इस पर निम्नलिखित मुहावरे हैं:

- लालच बुरी बला है।
- A Greedy Person is Never Satisfied.
- Avarice is the root of all evils
- Greed is a great evil.
- सोने के अंडे देने वाली मुर्गी को जान से मारना नहीं चाहिए।
- जितनी चादर उतने ही पैर फैलाने चाहिए।

अब बात यह आती है कि मनुष्य को किस आयाम को प्राथमिकता देनी चाहिए तो इस पर कई विद्वान कह गए है कि आयामों का संतुलन ही जीवन की प्राथमिकता होनी चाहिए और निर्णय वही उचित है जो जनहित में व निष्पक्ष हो।

कुन्दन लाल
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

पुस्तक समीक्षा

एक रोचक पौराणिक कथा 'रामायण – द गेम ऑफ लाईफ : शैटर्ड ड्रीम्स'

पुस्तक का नाम– 'रामायण – द गेम ऑफ लाईफ : शैटर्ड ड्रीम्स'
लेखक : शुभ विलास
प्रकाशक – जैको पब्लिशिंग हाउस
भाषा – अंग्रेजी मूल रूप में
शैली – इतिहास/पौराणिक कथा

पुस्तक के लिए एक वाक्य

लेखक अयोध्या और उससे आगे राम के वनवास का वर्णन और चित्रण करते हुए सदियों पुरानी कहानियों को आधुनिक समय के रिश्तों से जोड़ने की कोशिश कर रहा है ।

लेखक के बारे में

शुभ विलास, एक आध्यात्मिक साधक और प्रेरक वक्ता, इंजीनियरिंग और पेटेंट कानून में विशेषज्ञता के साथ कानून में डिग्री धारक हैं । उनके नेतृत्व सेमिनार कॉर्पोरेट घरानों में शीर्ष स्तर के प्रबंधन के साथ लोकप्रिय हैं।

लेखक की शैली

मैंने शुभा विलास को पहले नहीं पढ़ा है। वह श्रीमद भागवत गीता, रामायण और अन्य धार्मिक परंपराओं की शिक्षाओं को लागू करके लोगों को आधुनिक जीवन स्थितियों से निपटने में मदद करता है।

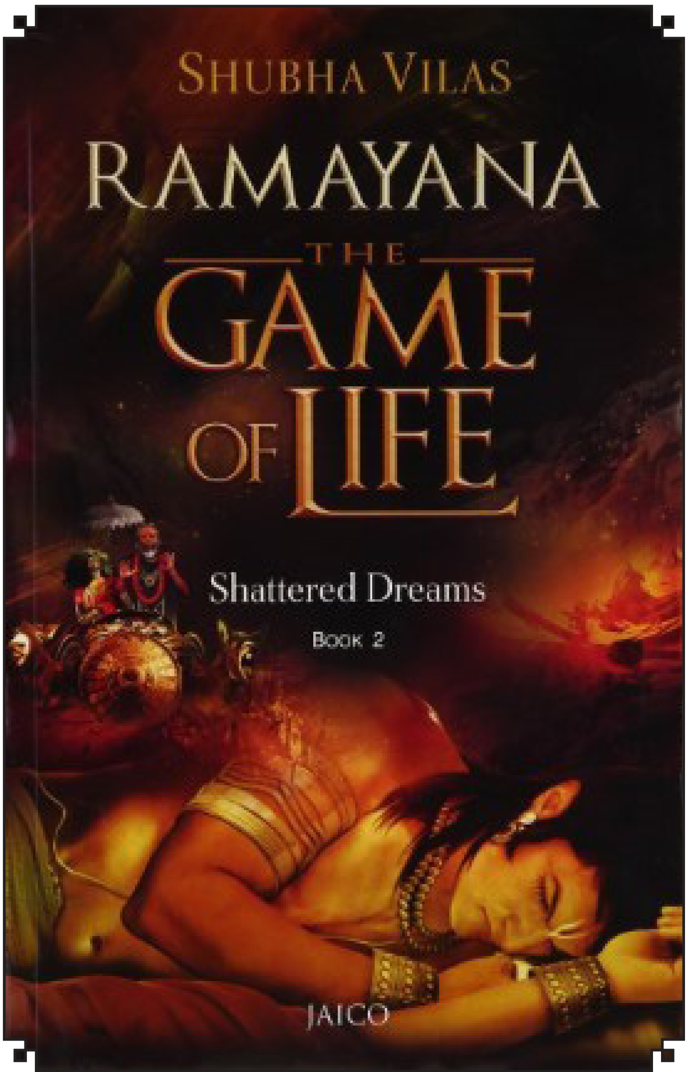

शीर्षक और पुस्तक का आवरण

पुस्तक का आवरण आकर्षक है और राम को एक परेशान लेकिन बहुत सुखदायक अभिव्यक्ति के साथ

सोते हुए दिखाता है। दशरथ के साथ रथ पृष्ठभूमि में दिखाया गया है, लेकिन रथ को घोड़े के स्थान पर गधे से हाँकते हुए दिखाया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर पाठक वास्तव में अनुमान लगा सकता है कि कहानी से क्या उम्मीद की जा सकती है।

शीर्षक वास्तव में दिलचस्प है और पहले से ही रामायण की कहानी से अवगत होने के कारण, इससे मुझे पुस्तक को पढ़ने से पहले ही उससे जुड़ने में निश्चित रूप से मदद मिली।

किताब के बारे में

यह नई आध्यात्मिक और प्रेरक श्रृंखला में राष्ट्रीय बेस्टसेलर, रामायण – द गेम ऑफ लाईफ, में भाग 1 – राइस ऑफ द सन प्रिंस, के बाद अगली कड़ी है। भले ही मैंने भाग 1 नहीं पढ़ा है, फिर भी मैं अगली कड़ी को समझने में सक्षम था और कहानी में शायद ही कोई कमी रह गई थी। इस भाग में सीता के साथ राम के विवाह के बाद का समय, राम को वनवास भेजने का दशरथ का कठोर निर्णय और उसके बाद के समय कैद है। हालाँकि, एक विशेष बात जो मुझे पुस्तक के बारे में वास्तव में पसंद आई वह थी कैकेयी और भरत को चित्रित करने का तरीका। कैकेयी को अक्सर बुरी रानी माना जाता है लेकिन कैकेयी को राम को अपने पुत्र के रूप में प्रेम करते हुए दिखाया गया है।

रामायण की कहानी के साथ–साथ जीवन की व्यावहारिकताओं को जिस तरह पिरोया गया है, वह इस पुस्तक का सबसे अच्छा हिस्सा है।

क्या अच्छा था

जबकि इतिहास हमें बहुत अच्छी तरह से ज्ञात है, पुस्तक के बारे में जो मुझे वास्तव में पसंद आया वह फुटनोट्स में ज्ञान के शब्द थे। यह वास्तव में आपके पुस्तक को देखने के तरीके को बदल देता है। पाठक न केवल पुस्तक को 'पढ़ता' है, अपितु पुस्तक के माध्यम से सीखता है। किताब में सीखने के लिए बहुत कुछ है, बशर्ते आप सीखने को तैयार हों।

क्या अच्छा हो सकता था

जिस तरह से हम राम और लक्ष्मण के मुख्य पात्रों को देखते हैं, पुस्तक में कहीं–कहीं पर पौराणिक चरित्रों को एकदम भिन्न तरीके से चित्रित किया गया है। जो लोग रामायण के इतिहास को नहीं जानते, वे इस पुस्तक को पढ़कर रामायण के बारे में एक अलग ही धारणा बना लेंगे।

अंतिम समीक्षा

अतीत का विषय होने के कारण इतिहास लेखक के लिए रचनात्मकता की ज्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ता, फिर भी इसे आधुनिक जीवन से जोड़कर लेखक ने मुझे बांधे रखा।

सिमरदीप सिंह
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

लेख

लाचित बोड़फुकन

असम के आत्म–गौरव और स्वाभिमान के गौरवशाली प्रतीक

कुछ ही समय पहले भारत सरकार ने भारत के वीर सपूत असम की पहचान, लाचित बोड़फुकन की 400वीं जयंती के उपलक्ष्य में 23 नवंबर से लेकर 26 नवंबर तक दिल्ली में तीन दिवसीय उत्सव मनाया था जिसमें देश के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, वित्त मंत्री व अन्य कई गणमान्य लोगों ने हिस्सा लिया था। मैं आज उन्हीं के बारे में कुछ लिखने जा रहा हूं।

जर्मन फिलॉस्फर हंस जॉर्ज गॉडमेर का कथन है–**'इतिहास हमारा नहीं, बल्कि हम इतिहास के हैं।'**

सोचता हूँ तो मुझे गॉडमेर का यह कथन पूरी तरह से सही लगता है। इतिहास हमें अतीत के अनुभवों से वर्तमान के बारे में कुछ सीख देता है, दूसरों के जीवन और संघर्षों से हमें नई ऊर्जा प्रदान करता है और प्रेरणा देता है। हर चीज का अपना एक इतिहास होता है और यह एक पहेली को सुलझाने जैसा है, जिसमें हमेशा आशा की एक किरण दिखाई देती है।

लाचित बोड़फुकन, अहोम साम्राज्य के एक सेनानायक थे। अहोम राजाओं ने 13वीं सदी की शुरुआत से लेकर 19वीं सदी की शुरूआत तक असम में लगभग 600 वर्ष तक राज किया। अहोम एक समृद्ध साम्राज्य था जो ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के ऊपरी और निचले इलाकों में फैला हुआ था। यहाँ के लोग अपनी उपजाऊ भूमि पर चावल की खेती किया करते थे। सन् 1615 से 1682 के दौरान मुगल शासकों जहांगीर और औरंगजेब के दौर में अहोम और मुगलों के बीच कई संघर्ष हुए। पहला प्रमुख सैन्य संघर्ष 1 जनवरी 1662 के दिन हुआ था, जिसमें मुगलों ने आंशिक जीत हासिल की थी और असम के कुछ हिस्सों पर विजय प्राप्त कर ली थी तथा अहोम की राजधानी गढ़गांव पर कब्जा कर लिया था। आगे अहोम राजा स्वर्गदेव चक्रध्वज सिंहा ने खोए हुए अहोम प्रदेशों को पुनः जीतने का प्रयास किया। अहोमों को शुरुआत में कुछ जीत भी मिली फिर औरंगजेब ने 1669 में जयपुर के राजा राम सिंह को खोए हुए क्षेत्र को फिर से हासिल करने के लिए भेजा। इसी के परिणामस्वरूप 1671 में सरायघाट की प्रसिद्ध लड़ाई हुई थी।

असल में बोड़फुकन अहोम साम्राज्य के पांच मंत्रियों (पार्षदों) में से एक थे। यह पद अहोम राजा प्रताप सिंह द्वारा बनाया गया था। राजा चन्द्रध्वज सिंहा ने लाचित बोड़फुकन को अहोम साम्राज्य के पांच बोड़फुकनों में से एक के रूप में चुना था और उन्हें

प्रशासनिक, न्यायिक और सैन्य जिम्मेदारियां दी थीं। लाचित एक शानदार सैन्य कमांडर थे, जो ब्रह्मपुत्र घाटी और आसपास की पहाड़ियों के इलाके को अच्छी तरह जानते थे। मुगलों के विपरीत, बोड़फुकन ने गुरिल्ला रणनीति को प्राथमिकता दी, जिसने उनकी छोटी, लेकिन तेजी से आगे बढ़ने वाली और सक्षम सेना को बढ़त प्रदान की। मुगलों के साथ शिवाजी की मुठभेड़ों की तरह, लाचित ने बड़े मुगल शिविरों को नुकसान पहुंचाया। उनके आक्रमणों से मुगल सैनिक परेशान होकर पीछे हटने लगते थे और उनकी शक्तिशाली सेना निराश हो जाती थी। मानसून के समय मुगलों की योजनाएँ और कष्टपद हो गईं। हालाँकि, मुगल अलाबोई की तलहटी के आसपास सफलतापूर्वक डेरा डालने में सक्षम थे।

अहोम और मुगलों के बीच का युद्ध बड़ा ही दिलचस्प था। मुगलों ने नदी की घाटी के माध्यम से आगे बढ़ने का प्रयास किया, उन्हें एहसास हो गया था कि नदी के रास्ते वे तेजी से आगे बढ़ सकते हैं। लाचित एक महान नौसैनिक योद्धा और रणनीतिकार थे, उन्होंने मुगलों के विरुद्ध आश्चर्यजनक रूप से एक साथ कई जगह से हमला करने का एक जटिल जाल तैयार किया। इतिहासकार एच. के. बारपुजारी ('असम का व्यापक इतिहास') के अनुसार, अहोम सेना ने पीछे से एक आश्चर्यजनक हमले के साथ एक सामने से हमला किया। उन्होंने सामने से कुछ जहाजों के साथ हमले का नाटक करके मुगल बेड़े को आगे बढ़ने का लालच दिया। मुगलों ने अपने पीछे के नदी के जल में रास्ता दे दिया जहां से अहोम सेना के मुख्य बेड़े ने हमला किया और एक निर्णायक जीत हासिल की। पर आगे चलकर अहोम सेना हार गई। इस पराजय का एक विशेष कारण था। अहोम राजा ने बोड़फुकन को एक सीधा युद्ध करने का आदेश दे दिया था। इस युद्ध में लगभग 10,000 अहोम योद्धाओं की मृत्यु हो गई। सरायघाट की लड़ाई के एक साल बाद लंबी बीमारी से लाचित बोड़फुकन का निधन हो गया। सरायघाट की लड़ाई मुगलों द्वारा असम में अपने साम्राज्य का विस्तार करने के, आखिरी बड़े प्रयास में अंतिम लड़ाई थी। 1669 में एक लंबे संघर्ष के बाद मुगलों को थकी हुई जीत हासिल हुई। हालाँकि मुगलों ने गुवाहाटी की अहोम राजधानी को फिर से हासिल करने में कामयाबी हासिल कर ली थी, पर आगे चलकर अहोमों ने 1682 में इटाखुली की लड़ाई में फिर से निर्णायक जीत कर ली और इसे अपने शासन के अंत तक बनाए रखा।

हर संस्कृति और समुदाय के अपने नायक होते हैं। समय के साथ, असमिया नायकों में लाचित बोड़फुकन सभी बाधाओं के खिलाफ प्रतिरोध, वीरता, साहस और बुद्धिमत्ता का एक बड़ा प्रतीक बन गए हैं। आज वे असमिया आत्म–गौरव को परिभाषित करते हैं।

असीम गुप्ता
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून

लेख

आत्मनिर्भर भारत: एक राष्ट्रीय कर्तव्य

आत्मनिर्भर शब्द दो भागों से मिलकर बना है, 'आत्म' व 'निर्भर'। 'आत्म' शब्द का अर्थ है 'स्वयं' व 'निर्भर' शब्द का अर्थ है 'आश्रित', अर्थात स्वयं पर आश्रित। कहने का अर्थ है कि आत्मनिर्भर व्यक्ति अपनी जरूरतों के लिए स्वयं पर आश्रित रहता है। 'आत्मनिर्भर भारत' की कल्पना का मूल आधार ही यही है कि भारत अपनी सभी प्रकार की जरूरतों को घरेलू उत्पादन के द्वारा पूरा करें व अपनी वैश्विक निर्भरता को कम करें। यह शक्तिशाली राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आत्मनिर्भर भारत का महत्व:

आत्मनिर्भरता भारत को कई क्षेत्रों में मजबूत कर सकती है, जैसे –

- आत्मनिर्भरता से विभिन्न वस्तुओं, कलपुर्जों, तकनीकी सामानों आदि का उत्पादन देश में ही होने लगेगा, जिनके लिए अभी भारत अन्य देशों पर निर्भर है। घरेलू उत्पादन से भारत का निर्यात भी बढ़ेगा।
- आयात घटने व निर्यात बढ़ने से भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाने में सहायता मिलेगी।
- नए कारखानों व संस्थानों के खुलने से रोजगार के अवसर बढ़ेंगे और बेरोजगारी पर अंकुश लगेगा।
- नई–नई तकनीकियों के आविष्कार व विकास से युवाओं के लिए नवीन क्षेत्रों में शिक्षा के अवसर पैदा होंगे। इससे देश में शिक्षा का स्तर व कार्यकुशलता बढ़ाने में सहायता मिलेगी।
- आत्मनिर्भरता विश्व में भारत की सकारात्मक व सशक्त छवि बनाने में कारगर साबित होगी।

आत्मनिर्भरता को प्रेरित करने के उपाय:

- व्यवसाय स्थापित करने हेतु मौद्रिक सहायता व ऋण, अनुमोदन प्रक्रिया व नियमों का सरलीकरण, कर छूट इत्यादि प्रयास कारगर साबित हो सकते हैं।
- नए कारखानों व व्यवसायों के लिए कुशल मानव संसाधनों की जरूरत होगी। अतः युवाओं को कार्यकुशल व शिक्षित बनाना होगा।
- भारत में बनी हुई वस्तुओं व तकनीकी के क्रय व उपयोग के लिए लोगों को प्रेरित करना होगा, विज्ञापन आदि इसमें सहायक साबित हो सकते हैं।
- अनुसंधान के लिए माहौल विकसित करना होगा जिससे तकनीकी स्तर पर भारत आगे रह सके।
- 'आत्मनिर्भर भारत' के संदेश को प्रचार–प्रसार द्वारा जन–जन तक पहुँचाना होगा। आयात को

कम करने व निर्यात को बढ़ाने पर जोर देना होगा।

हम सभी भारतीयों का कर्तव्य है कि प्रधानमंत्री जी द्वारा जो 'आत्मनिर्भर भारत' की परिकल्पना की गई है, उसे अपने छोटे–छोटे व महत्वपूर्ण प्रयासों से मूर्त रूप प्रदान करें।

आत्मनिर्भरता भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने और विश्व में एक अहम स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण और निर्णायक सिद्ध होगी। सरकार की भूमिका तो इस लक्ष्य को पाने में अहम है ही।

तू सूरज है, फिर निकलेगा

चल उठ खड़ा हो कर्मवीर,
बाधाओं को कर चीर–चीर,
पायेगा लक्ष्य गर डटा रहा,
धर धीरज को ना हो अधीर।

यदि दृढ़ है पथ पर, गिरकर फिर संभलेगा,
कर प्रण कि तू सूरज है, फिर निकलेगा।

कर भाग्य का तू फैसला,
ना कम हो तेरा हौंसला,
जो कर्म तेरा कर वही,
परिणाम सोचे क्यूँ भला।

मेहनत से तू अपनी, तकदीर लिखेगा,
कर प्रण कि तू सूरज है, फिर निकलेगा।

समय–समय की बात है,
समय ना रहता एक सा,
यदि है प्रयास सत्यनिष्ठ,
बदलेगी हर दिशा–दसा।

कालचक्र फिर अपनी, करवट बदलेगा,
कर प्रण कि तू सूरज है, फिर निकलेगा।

चाहे सपने कितने ऊंचे हों,
चाहे कितना भी हो कठिन मार्ग,
उन सपनों की खातिर तेरे अपने,
करते अपनी खुशियों का त्याग।

अपनों का हो साथ, तो कोई कर क्या लेगा,
कर प्रण कि तू सूरज है, फिर निकलेगा।

कोशिश तेरी भरपूर हो,
चाहे मंजिल कितनी दूर हो,
ना डिगा सके संकल्प को,
हर मुश्किल चकनाचूर हो।

आँखों में है जो लक्ष्य, सोने ना देगा,
कर प्रण कि तू सूरज है, फिर निकलेगा।

राहुल गुप्ता
उप प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

लेख

आत्मनिर्भर भारतः अवसर और चुनौतियां

आत्मनिर्भर शब्द से ही ज्ञात होता है कि किसी भी विशेष कार्य के लिए खुद पर निर्भर होना। इस समय भारत आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और खुद को सक्षम बनाने के लिए अगले 25 वर्षों की तैयारी कर रहा है ताकि नागरिकों को किसी और देश पर निर्भर ना होना पड़े। यह लक्ष्य हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी का है मगर यह सपना भारत के सभी नागरिकों को मिलकर पूरा करना होगा। आत्मनिर्भरता के लिए हमें एक दूसरे को और भारत सरकार को भी प्रेरित करते रहना होगा। समय–समय पर प्रयास करने होंगे।

हिंदी का सम्मानः हिन्दी भारत की राजभाषा है और देश की आजादी में भी हिंदी का बड़ा योगदान रहा है। हम सब भारतवासियों को हिंदी का प्रचार–प्रसार करना चाहिए। हिंदी दुनिया में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। हमें अपना काम अपनी भाषा में करते हुए इसे बढ़ावा और सम्मान देना चाहिए।

शिक्षा के स्तर में वृद्धिः आत्मनिर्भर भारत के लिए शिक्षा सबसे महत्त्वपूर्ण विषय है। जैसे–जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ेगा, भारत उन्नति करेगा और सक्षम भी बनेगा। इसके लिए भारत सरकार को नई–नई नीतियां (Policies) लानी चाहिए जिससे शिक्षा का स्तर बढ़े और हर किसी को शिक्षा मिले।

रिसर्च के लिए अवसर और प्रेरणाः सरकार को देश के युवाओं को रिसर्च (R&D) और डेवलपमेंट के लिए प्रेरित करना चाहिए। कोरोना से हम सबने यही सीखा है कि अगर देश का रिसर्च व मेडिकल क्षेत्र अच्छा है तो बड़ी से बड़ी अचानक आने वाली मुश्किलों का भी सामना किया जा सकता है।

स्टार्ट अप्स और नए नए व्यापारों का स्वागतः भारत सरकार को देश के टैलेंट (Talent) को भारत के विकास के लिए प्रेरित करने हेतु नए–नए कानून और उपाय करने चाहिए जिससे भारत हर जरूरत के लिए सक्षम व आत्मनिर्भर बन जाए। नये व्यवसाय को शुरू करने के लिए उद्यम को बढ़ावा देना चाहिए।

भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए सबसे जरूरी बिन्दु यह भी है कि देश के किसानों को प्रेरित करना होगा। किसानों की समस्याओ को समझना होगा।

भारत सरकार ने भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए SDGs (स्व विकास लक्ष्य) की सूची बनाई है ताकि भारत जल्द से जल्द आत्मनिर्भर बन सके। हम सब भारतीयों को इसमें अपना–अपना योगदान देना होगा, तभी यह लक्ष्य पूरा होगा।

नेहा शर्मा
मुख्य प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

कविता

हौसलों की उड़ान

उड़ना है मुझे
बस उड़ना है मुझे...।

पैदा होने से लेकर मरने तक के सफर में,
अपने अस्तित्व को तलाशने में निकली,
हर उस नारी को सलाम है, जो इस दुनिया की हर विपरीत परिस्थिति में,
लड़ते हुए, सोच–समझ कर निर्णय लेते हुए...
अपनी मंजिल की तलाश में उड़ चली है...।
बिना थके बस उड़ना है उसे बस उड़ना है उसे...।

सब्र, बुद्धिमत्ता, दृढ़ निश्चय से,
घर और बाहर की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाते हुए,
जजमेंटल हुए लोगों को निरुत्तर करते हुए
अपनी एक पहचान बनाते हुए...
पंखों को फैलाते हुए...
उड़ना है उसे बस उड़ना है उसे...

नहीं मांगते हम आरक्षण वारक्षण...
बराबरी भी खुद ही ढूंढ लेंगे...
चाहें तो बस एक बदला हुआ नजरिया,
मौका... विश्वास... खुद का खुद पर...
कि ऐसी कोई मंजिल नहीं जो पा ना सकें...
क्यूंकि बस उड़ना है उसे बिना थके...
क्यूंकि बस उड़ना है उसे...।

अनंता गोयल
प्रबंधक (वित्त एवं लेखा)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

कविता

कोई फर्क नहीं ज्यादा

कोई फर्क नहीं ज्यादा मैं भी बस आप जैसा हूँ !!

सर्दी की खामोश अंधेरी रात जैसा हूँ,
जिसका कोई नाम नहीं उस जज़्बात जैसा हूँ,
जो रूह को तर कर दे मैं उस बरसात जैसा हूँ,
कोई फर्क नहीं ज्यादा मैं भी बस आप जैसा हूँ !!

पुरानी किताब में पड़े सूखे गुलाब जैसा हूँ,
जिसे पढ़ सके हर कोई उस किताब जैसा हूँ,
आंखो में सिमटे एक सैलाब जैसा हूँ,
कोई फर्क नहीं ज्यादा मैं भी बस आप जैसा हूँ !!
सोने ना दे किसी को मैं उस अरमान जैसा हूँ,
नई सड़क पर टूटे पुराने मकान जैसा हूँ,
दुनिया में मैं भी एक मेहमान जैसा हूँ,
कोई फर्क नहीं ज्यादा मैं भी बस आप जैसा हूँ !!

जिसका नशा नहीं उतरता मैं उस शराब जैसा हूँ,
गर्दिश में कहकशों के बीच आफताब जैसा हूँ,
जिसे खुदा दिखाता है मैं उस ख्वाब जैसा हूँ,
कोई फर्क नहीं ज्यादा मैं भी बस आप जैसा हूँ !!

विवेक कुमार गुप्ता
प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

धर्म क्या है

जब रात काली हो अमावास
और रास्ता खोने लगे
तब निराशाओं को चीर कर
आशाओं का एक दीपक जलाना धर्म है!

जब मीलों लम्बा हो रास्ता
और मंजिल भी तुमको ना दिखे
मंजिल की चाह में हर सांस पे
तब एक कदम बढ़ाना धर्म है!

जब पत्थरों से राह के पैर तेरे छिल चुके हों
और राह मुश्किल सी लगे किसी चाह की
तब जिस चाह का हस्ती मिटाना नाम हो
उस चाह पर खुद को मिटाना धर्म है!

जब तूफान राहों में हो खड़ा
और रास्ता तेरा बदलने भी लगे
उस वक्त लड़कर तूफान से
रूख़ उसका बदलना धर्म है!

जब दीपक जलाना चाह हो
और हवा ही साथ तेरा ना दे तब
जिस हवा का दीपक बुझाना काम हो
उस हवा में दीपक जलाना धर्म है!

राहुल राज
उप प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

कविता

कोई शॉर्ट कट नहीं होता

जाने कितने लोग मिलते हैं हमें जिंदगी की रेस में
पर मंजिल खुद ही तय करनी पड़ती है,
यूं तो हम जानते हैं,
सक्सेस का कोई शॉर्ट कट नहीं होता
पर लाइफ को मंजिल तक अकेले ले जाना
इतना आसान नहीं होता
यूं तो सबका अपना–अपना नसीब होता है
क्योंकि जिंदगी का सफर बड़ा अजीब होता है
हम अक्सर सोचते हैं काश कोई होता
जो हाथ बढ़ा देता हमें रास्ता मिल जाता
सफर आसान हो जाता
पर आखिरकार हम खुद पर भरोसा करना सीख जाते हैं।
सोचती हूँ क्या ये सबके साथ होता है?
जिंदगी की सीख सबको ऐसे ही मिलती है
जवाब ढूंढती हूँ सारे सवालों के
उत्तर कहीं खो जाते हैं
रह जाती है तो बस एक ही बात
सबसे जरूरी है खुद में यकीन
सबसे जरूरी है खुद पर विश्वास।

कृतिका धकाते
सहायक प्रबंधक (तकनीकी)
आरईसी निगम कार्यालय, गुरुग्राम

कारोबार से संबंधित गतिविधियां

नई दिल्ली में आयोजित यूपी इन्वेस्टर्स समिट 2023 में आरईसी और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच विद्युत एवं अक्षय ऊर्जा के क्षेत्र में 1 लाख करोड़ रुपए के समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

आरईसी, पीएफसी और इरेडा ने देश की नवीकरणीय और आगामी ऊर्जा के वित्तपोषण में तेजी लाने के लिए भारत में ऊर्जा ट्रांजिशन हेतु विदेशी मुद्रा कोष जुटाने के लिए केएफडब्ल्यू, जेआईसीए, एनडीबी, वर्ल्ड बैंक, एडीबी और ईआईबी के अधिकारियों के साथ संयुक्त बैठक की

मध्य प्रदेश इन्वेस्टर्स समिट 2023 में अक्षय ऊर्जा और वितरण क्षेत्र की परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए आरईसी द्वारा एमपीपीएमसीएल, आरयूएमएसएल और वर्ल्ड बैंक के साथ रणनीतिक समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर

आरईसी के सीएमडी श्री विवेक कुमार देवांगन, आई.ए.एस. तथा पीएफसी के सीएमडी श्री रविन्द्र सिंह ढिल्लों द्वारा आरईसी और पीएफसी के बीच वित्तीय वर्ष 2022–23 के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

बक्सर थर्मल पावर प्लांट के वित्तपोषण के लिए एसटीपीएल के साथ आरईसी और पीएफसी द्वारा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

आरईसी द्वारा एम.एम.आर.डी.ए. (मुंबई मेट्रोपॉलिटन रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी) के साथ 14,434 करोड़ रूपये के लोन के लिए समझौता

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा सूरत में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर से 15 सितंबर 2022 के दौरान सूरत में दो दिवसीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता देश के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने की। इस सम्मेलन में भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों तथा बैंकों के वरिष्ठ अधिकारी और राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को याद करते हुए गृह मंत्री अमित शाह जी ने कहा– महात्मा गांधी ने कहा था कि 'राजभाषा हिंदी के बिना ये राष्ट्र गूंगा है हिंदी ही इस राष्ट्र को बोलता कर सकती है।' हमारी राजभाषा और हमारी स्थानीय भाषाएं विश्व की सबसे समृद्ध भाषाओं में से एक है। जब तक हम इस बात का संकल्प नहीं करते कि इस देश का शासन, प्रशासन, इस देश का ज्ञान और अनुसंधान हमारी भाषाओं में होगा, राजभाषा में होगा। तब तक हम इस देश की क्षमताओं का उपयोग नहीं कर सकते हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि संविधान सभा के निर्णय को सिर्फ याद करने का दिन नहीं है। 75 साल से 100 साल ये जो अमृत काल है, ये संकल्प लेने का और संकल्प सिद्धि करने का समय है।

हिंदी दिवस के दिन किए गए अपने ट्वीट में माननीय गृह मंत्री जी ने लिखा कि *'राजभाषा हिंदी राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोती है। हिंदी सभी भारतीय भाषाओं की सखी है। वर्तमान सरकार हिंदी सहित सभी स्थानीय भाषाओं के समानांतर विकास हेतु प्रतिबद्ध है। हिंदी के संरक्षण व संवर्धन में योगदान देने वाले महानुभावों को नमन करता हूँ। सभी को 'हिंदी दिवस की शुभकामनाएं।'*

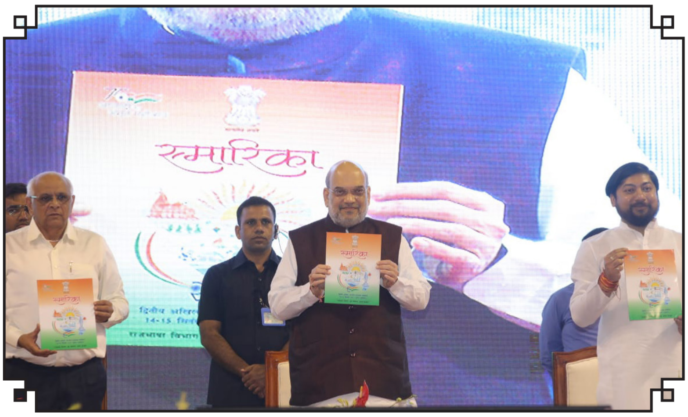

Amit Shah
@AmitShah

भारत विभिन्न भाषाओं का देश है और हर भाषा का अपना महत्व है परन्तु पूरे देश की एक भाषा होना अत्यंत आवश्यक है जो विश्व में भारत की पहचान बने। आज देश को एकता की डोर में बाँधने का काम अगर कोई एक भाषा कर सकती है तो वो सर्वाधिक बोले जाने वाली हिंदी भाषा ही है।

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा पिछले 06 माह में आरईसीआईपीएमटी सहित आरईसी तिरुवनंतपुरम, भोपाल, रायपुर तथा रांची कार्यालयों का निरीक्षण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। निरीक्षण के बाद समिति द्वारा दी गई रिपोर्ट पर अनुवर्ती कार्रवाई भी की गई।

आरईसीआईपीएमटी हैदराबाद कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी तिरुवनंतपुरम कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी भोपाल कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी रायपुर कार्यालय का निरीक्षण

आरईसी रांची कार्यालय का निरीक्षण

हिंदी पखवाड़ा

सितंबर माह में आरईसी कॉरपोरेट कार्यालय में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान, कार्मिकों के लिए राजभाषा ज्ञान, हिंदी स्लोगन लेखन, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी अनुवाद और हिन्दी वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 100 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया। विजेता कार्मिकों को नकद पुरस्कार राशि प्रदान की गई।

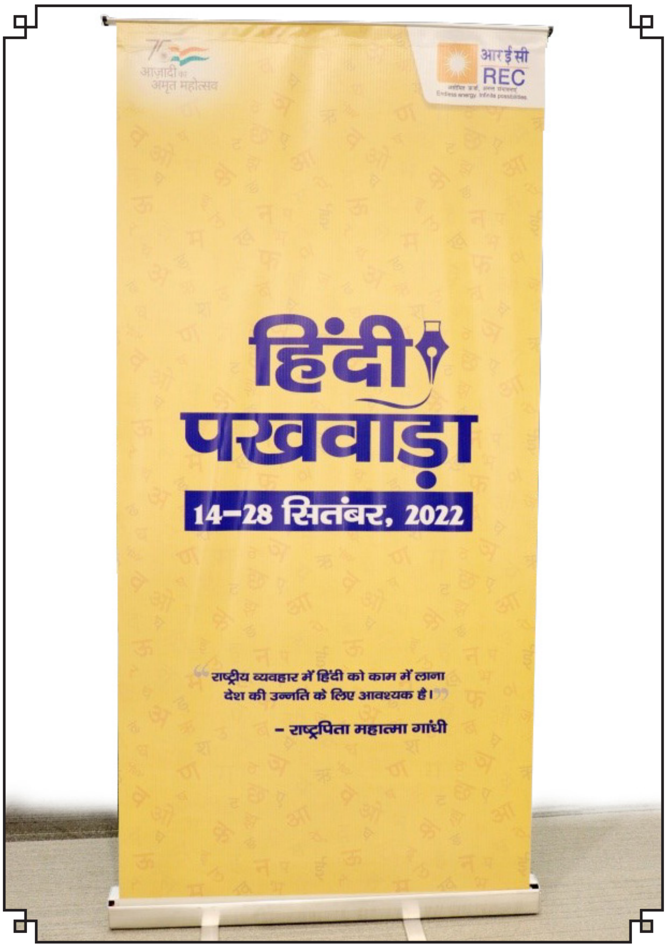

आरईसी द्वारा 27वें इंटर पावर सीपीएसयू बैडमिंटन टूर्नामेंट का आयोजन

आरईसी ने विद्युत मंत्रालय के पावर स्पोर्ट्स कंट्रोल बोर्ड के तत्वावधान में दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम 27वें अंतर–सीपीएसयू बैडमिंटन टूर्नामेंट का सफलतापूर्वक आयोजन किया। आरईसी ने पुरुष वर्ग में दूसरी बार क्लीन स्वीप किया और सभी खिताब जीते। सिंगल्स में अमित वर्मा ने स्वर्ण पदक और विजय बेहरा ने रजत पदक जीता। डबल्स में अमित वर्मा और विजय बेहरा की टीम ने स्वर्ण पदक जीता।

सी.एस.आर. गतिविधियां

भारत में खेलों के विकास के लिए 100 करोड़ रुपये की सहायता

दिव्यांगजनों को सहायक उपकरणों के वितरण के लिए एलिम्को के साथ सहयोग

माननीय विद्युत मंत्री जी द्वारा आरईसी के सीएसआर के अंतर्गत बिहार के भोजपुर में 12.68 करोड़ रुपये के 10 मोबाइल हेल्थ क्लिनिक– 'डॉक्टर आपके द्वार' प्रोजेक्ट का उद्घाटन

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

आरईसी के निगम कार्यालय में 31 अक्टूबर 2022 से 06 नवंबर 2022 के बीच 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत' थीम के साथ सतर्कता जागरूक सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्मिकों के लिए पैराग्राफ लेखन प्रतियोगिता, पोस्टर/कोलाज बनाने की प्रतियोगिता और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तथा कार्मिकों के परिवार के सदस्यों के लिए कविता लेखन प्रतियोगिता और पोस्टर/कोलाज बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंत में कार्मिकों के लिए 'भ्रष्टाचार मुक्त भारत – विकसित भारत' विषय पर कार्यशाला का भी आयोजन किया गया।

पुरस्कार एवं प्रशस्तियाँ

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन में सहयोग के लिए भारत सरकार के माननीय जल शक्ति मंत्री द्वारा सम्मान

आईओडी ग्लोबल द्वारा कॉरपोरेट गवर्नेंस के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए गोल्डन पीकॉक अवॉर्ड

'बेस्ट पब्लिक सेक्टर आईटी प्रोजेक्ट' का पुरस्कार

'द इकोनॉमिक टाइम्स' द्वारा 2022 के 'सर्वश्रेष्ठ ब्रांड' के रूप में मान्यता

राजभाषा पुरस्कार

विद्युत मंत्रालय द्वारा राजभाषा शील्ड

12 मई 2022 को नई दिल्ली में आयोजित हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री द्वारा आरईसी को राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2018–19 के लिए प्रथम और 2020–21 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री श्री आर.के. सिंह, विद्युत राज्यमंत्री श्री कृष्ण पाल एवं सचिव (विद्युत मंत्रालय) श्री आलोक कुमार आरईसी की पत्रिका ऊर्जायन का विमोचन करते हुए

माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री श्री आर.के. सिंह एवं विद्युत राज्यमंत्री श्री कृष्ण पाल आरईसी को राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए पुरस्कार देते हुए

राजभाषा शिखर सम्मान

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद् द्वारा भारत सरकार की महारत्न कंपनी आरईसी लिमिटेड को हिंदी के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए ''राजभाषा शिखर सम्मान'' से सम्मानित किया गया। यह सम्मान 18 से 19 अक्टूबर 2022 को गुवाहाटी में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में असम के महामहिम राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी, असम सरकार के माननीय मंत्री श्री परिमल शुक्ल बैद्य और अंतर्राष्ट्रीय हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार यादव द्वारा प्रदान किया गया। आरईसी के कार्यपालक निदेशक श्री आर. पी. वैष्णव और आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी के सीपीएम श्री योगेन्द्र सिंह ने यह सम्मान आरईसी की तरफ से ग्रहण किया।

असम के महामहिम राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी, आरईसी के कार्यपालक निदेशक श्री आर. पी. वैष्णव को राजभाषा शिखर सम्मान प्रदान करते हुए

भारत द्वारा जी20 सम्मेलन की अध्यक्षता

एक पृथ्वी, एक कुटुम्ब, एक भविष्य

G20 भारत 2023 INDIA

वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

वसुधैव कुटुम्बकम् के नारे के साथ 2023 में होने वाली G20 बैठक की अध्यक्षता भारत द्वारा की जाएगी। G20 लोगो भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों – केसरिया, सफेद और हरे, एवं नीले रंग से प्रेरित है। इसमें भारत के राष्ट्रीय पुष्प कमल को पृथ्वी ग्रह के साथ प्रस्तुत किया गया है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। पृथ्वी जीवन के प्रति भारत के पर्यावरण अनुकूल दृष्टिकोण को दर्शाती है, जिसका प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य है। G20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में "भारत" लिखा है।

भारत का G20 अध्यक्षता का विषय – "वसुधैव कुटुम्बकम्" या "एक पृथ्वी – एक कुटुंब – एक भविष्य" – महा उपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। अनिवार्य रूप से, यह विषय सभी प्रकार के जीवन मूल्यों – मानव, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव और पृथ्वी एवं व्यापक ब्रह्मांड में उनके परस्पर संबंधों की पुष्टि करता है।

यह विषय (थीम) व्यक्तिगत जीवन शैली और राष्ट्रीय विकास दोनों स्तरों पर पर्यावरण की दृष्टि से धारणीय और जिम्मेदार विकल्पों से संबद्ध LiFE (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) पर भी प्रकाश डालता है, जिससे वैश्विक स्तर पर परिवर्तनकारी कार्यों के परिणामस्वरूप एक स्वच्छ, हरे–भरे और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण होता है। यह विषय सामाजिक और व्यक्तिगत उत्पादन और उपभोग विकल्पों पर भी प्रकाश डालता है और पर्यावरण की दृष्टि से व्यवहार्य और जिम्मेदार व्यवहार विकल्प अपनाने का आह्वान करता है जिससे वैश्विक सुधारात्मक कार्रवाई की जा सके ताकि मानवता को अपेक्षाकृत स्वच्छ, हरित और उज्ज्वल भविष्य प्राप्त हो।

लोगो और विषय (थीम) एक साथ भारत की G20 की अध्यक्षता का एक सशक्त संदेश देते हैं, जो दुनिया में सभी के लिए न्यायसंगत और समान विकास के प्रयास को दर्शाता है। क्योंकि आज जब हम एक स्थायी, समग्र, जिम्मेदार और समावेशी तरीके से इस चुनौतीपूर्ण समय से गुजर रहे हैं तो ऐसे समय में ये G20 अध्यक्षता के लिए हमारे आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूल जीवन से संबंधित हमारे विलक्षण भारतीय नजरिये को दर्शाते हैं।

भारत के लिए, G20 की अध्यक्षता "अमृतकाल" की शुरुआत है, जो 15 अगस्त 2022 को स्वतंत्रता की 75 वीं वर्षगांठ से शुरू होकर एक भविष्यवादी, समृद्ध, समावेशी और विकसित समाज, जिसकी मुख्य विशेषता मानव–केंद्रित दृष्टिकोण है, के लिए अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी तक 25 वर्ष की अवधि है।

(G20 की वेबसाइट से साभार)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

आरईसी REC

असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं

Endless energy. Infinite possibilities.

बिजली बचाएं, बचत बढ़ाएं

बिजली का अनावश्यक उपयोग न करें

कम बिजली खर्च करने वाले उपकरणों का प्रयोग करें

विद्युत मंत्रालय
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्मार्ट मीटर
का उपयोग करें

स्मार्ट मीटर
स्मार्ट शुरूआत

स्मार्ट मीटर के प्रयोग से बिजली की गुणवत्तापूर्ण, सुरक्षित और बेहतर आपूर्ति का लाभ उठाएं।
आज ही अपना मीटर स्मार्ट मीटर में बदलें।

सटीक मीटर रीडिंग	बिजली के उपभोग पर पूरा नियंत्रण	बिजली कटौती का शीघ्र समाधान	रिचार्ज के आसान विकल्प	मासिक बिलों में कमी

स्मार्ट मीटर के बारे में किसी भी जानकारी के लिए 1912 पर संपर्क करें

आरईसी लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
सीआईएन: L40101DL1969GOI005095
पंजीकृत कार्यालय: कोर–4, स्कोप कॉम्पलेक्स, 7 लोधी रोड, नई दिल्ली–110003
कॉरपोरेट कार्यालय: प्लॉट नं. आई–4, सेक्टर–29, गुरूग्राम, हरियाणा–122001
www.recindia.nic.in | +91-124-444 1300 | contactus@recl.in | हमें फॉलो करें: @reclindia